Scope of Curriculum
पाठ्यचर्या का क्षेत्र

(1) लक्ष्यों एवं संज्ञानात्मक विकास का पोषण।
Determination of goals and objectives

(2) बालकों के संज्ञानात्मक विकास का पोषण।
नर्चरिंग
Nurturing cognitive development of children

(3) बालकों के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य संवर्द्धन
Promoting psychological and social health of children.

11 Sunday

(4) शैक्षणिक स्रोतों का उपयोग
use of academic sources.

(5) अधिगम हेतु व्यवस्था Arrangements for learning

~~Association of new trends~~

(6) नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य / प्रवृत्तियों
Association of new trends.

Scanned with CamScanner

(7) समस्त कार्यक्रमों एवं बालकों के कार्यों का मूल्यांकन।
Evaluation of all programs and work of children

(8) छात्रों का व्यक्तिगत बोध एवं इनके अनुरूप शिक्षण।
Personal perception of students and their corresponding learning.

Unit - II

पाठ्य-पुस्तक का अर्थ एवं महत्व

Meaning and importance of text-Book

क्रॉनबेक (Cronback) ने लिखा है, अमेरिका में आज शैक्षिक चित्र का केन्द्र-बिन्दु पाठ्य-पुस्तक है। इसका विद्यालय में महत्वपूर्ण स्थान है। इसका अतीत में भी महत्व अधिक था और आज भी शक्तिशाली महत्व है। इसको जनसाधारण की भी लोकप्रियता प्राप्त होती है। क्योंकि पाठ्य-पुस्तक विद्यालय या कक्षा में छात्र तथा शिक्षक के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जो कि किसी एकाकी विषय या सम्बन्धित विषयों के कोर्स का प्रस्तुतीकरण करती है।"

Wk 11 / 072-293

भारतीय पाठ्य - पुस्तक का स्तर

Standard of Indian Text - Book

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग)

भारत सरकार ने 23 सितम्बर 1952 को डॉ० लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता मे माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की। इन्हीं के नाम पर इसे मुदालियर आयोग कहा गया। आयोग ने पाठ्यचर्या मे विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने त्रिस्तरीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरु करने इत्यादि की सिफारिश की। माध्यमिक शिक्षा आयोग -

Secondary education commission
माध्यमिक शिक्षा आयोग

Index -
अनुक्रमणिका Unit - III

Concept of Curriculum

(1) Understanding the meaning and nature of curriculum & Need for curriculum in schools

(1) Dimensions of curriculum
पाठ्यक्रम के अंग

(1) पाठ्य - पुस्तके
Text - Books

(2) खेल - कूद क्रियाएँ
Sports Activities

(3) सांस्कृतिक क्रियाएँ
Cultural activities

(4) भ्रमण
Tour

Scanned with CamScanner

विद्यालयों में पाठ्यक्रम की आवश्यकता
Need of Curriculum in Schools

1. सुव्यवस्थित शिक्षा की व्यवस्था
Well organised education system
2. उद्देश्यों की प्राप्ति
Attainment of objectives
3. ज्ञान प्राप्ति का साधन (अटेनमेंट)
Source of Acquiring Knowledge
4. शिक्षण सामग्री का निर्धारण
Determination of study material
5. मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक
Helpful in Evaluation process
6. आवश्यकताओं की पूर्ति
Fulfilment of Needs
7. पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में सहायक
Helpful Preparing Text-books
8. शिक्षण विधियों का चयन
Selection of proper Teaching method

Scanned with CamScanner

(9) शिक्षकों के लिए मापदण्ड
The set criteria for Teachers.

(10) विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान
To get knowledge of various subjects.

शैक्षिक प्रक्रिया के तीन पहलू
Three aspects of educational process

(1) शिक्षा क्यों (Why of Education)
(2) शिक्षा कैसे (How of education)
(3) शिक्षा में क्या (What of education)

(1) शिक्षा क्यों → शिक्षा के उद्देश्यों से सम्बन्ध है
(2) शिक्षा कैसे — शिक्षण विधियों से सम्बन्ध है
(3) शिक्षा में क्या — शिक्षा के पाठ्यक्रम से सम्बन्ध है

इसके साथ ही पाठ्यक्रम औपचारिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है। औपचारिक शिक्षा केवल विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि में ही सम्भव है। ऐसी शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण उस समय की आवश्यकताओं व परिस्थितियों के आधार पर होता है।

Scanned with CamScanner

Differentiating curriculum framework, curriculum and syllabus: Their significance in schools education

पाठ्यक्रम के ढांचे मे अंतर, पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम, स्कूलो की शिक्षा में उनका महत्व

Concept of curriculum design

पाठ्यचर्या प्रारुप का प्रत्यय

पाठ्यचर्या प्रारुप एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या बनाए जाने के पहले उसका प्रारुप तैयार किया जाता है। वही प्रारुप या अभिकल्प पाठ्यचर्या को वास्तविक स्वरुप प्रदान करता है। जितने प्रकार का पाठ्यचर्या का प्रारुप होगा, उतने ही प्रकार का पाठ्यचर्या होगा।

प्रारुप के अन्तर्गत अध्ययन के विषयों को संगठित किया जाता है। इसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी का महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। उनके मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर विषयों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रारुप में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को भी विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसमें सम्पूर्ण तथा सार्वभौमिक शिक्षा, सामूहिक शिक्षा, व्यक्तिगत अध्ययन, सामाजिक कार्यों को भी स्थान दिया जाता है। नवीन समयानुसार, परिस्थितियों तथा वातावरण के अनुसार पाठ्यचर्या प्रारुप के साथ आधुनिक प्रयोग किए गए हैं। इस पाठ्यचर्या प्रारुप में परम्परागत तथा आधुनिक तत्वों का समावेश किया जाता है।

Scanned with CamScanner